RAJYA SABHA

Friday, the 13th August, 1993/22nd Sravana, 1915 (Saka)

The House met at eleven of the Clock, **Mr. Chairman** in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Opening up of New Kendriya Vidyalayas

*241. SYED SIBTEY RAZI : Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state :

(a) whether Kendriya Vidyalayas have been set up in all States and Union Territories of the country;

(b) if so, the names of these schools as on 31st July, 1993 State and Union Territory-wise;

(c) whether Government propose to set up more such Vidyalayas in Uttar Pradesh and Delhi during the next two academic years;

(d) if so, the details thereof and if not, the reasons therefor;

(e) whether Kendriya Vidyalayas have also been set up in foreign countries; and

(f) if so, the names of such countries as on 31st July, 1993 ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (DEPTT. OF EDUCATION AND DEPTT. OF CULTURE) (KUMARI SELJA) : (a) to (f) A Statement is laid on the table of the Sabha.

Statement

Re. Opening of New Kendriya Vidyalayas

The Kendriya Vidyalayas are set up at the places where there is sizeable concentration of Central Government employees in Civil or Defence Sectors or in places where Public Sector Undertakings are located on the basis of demands/recommendations of the user agencies and facilities available for opening new Kendriya Vidyalayas. State-wise distribution of 794 Kendriya Vidyalayas is given in the enclosed list. (*See* below) Kendriya Vidyalayas have been set up in all States/UTs, except Lakshadweep, Dadra, Nagar Haveli and Daman, Dieu.

The Govt. has approved opening of up to 20 Kendriya Vidyalayas annually in Defence & Civil Sectors during the next 5 years and as many as found suitable under the Project Sector, where all recurring and non-recurring expenditure is borne by the sponsoring projects. As such new Kendriya Vidyalayas may be opened in Uttar Pradesh and Delhi also if suitable proposals are received by the Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Three Kendriya Vidyalayas have been set up in foreign countries at Kathmandu, Kabul and Moscow. Kendriya Vidyalaya at Kabul has not been functioning since 1989-90 due to the disturbed conditions prevailing there.

LIST

State-wise Distribution of Kendriya Vidyalayas

Sl. No.	STATE/UT	No. of KVS
1	Andhra Pradesh	41
2	Assam	45
3	Bihar	55
4	Gujarat	39
5	Haryana	22
6	Himachal Pradesh	16
7	Jammu & Kashmir	25
8	Karnataka	27
9	Kerala	23
10	Madhya Pradesh	81
11	Maharashtra	51
12	Manipur	05
13	Meghalaya	07
14	Nagaland	05
15	Orissa	24
16	Punjab	36
17	Rajasthan	44
18	Sikkim	01
19	Tamil Nadu	27
20	Tripura	05
21	Uttar Pradesh	113
22	West Bengal	45
23	A&N Island, Port Blair	02
24	Arunachal Pradesh	07
25	Chandigarh	06
26	Delhi	31
27	Goa	05
28	Pondicherry	02
29	Mizoram	01
OUTSIDE INDIA		
30	Kathmandu, Nepal	01
31	Kabul, Afghanistan	01
32	Moscow, Russia	01
	TOTAL :	794

MR. CHAIRMAN: Incidentally, shall we take up this question together with the other question on Rajasthan?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): That is about Navodaya.

MR. CHAIRMAN: Then we will take up separately.

सैयद शिब्ते रज़ी : मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि दिन प्रति दिन केन्द्रीय विद्यालयों के ऊपर दबाव बढ़ता चला जा रहा है और माननीय मंत्री जी ने इसी सदन में अनस्टार्ड क्वेश्चन संख्या 736 के संबंध में 30 जुलाई, 1993 को जवाब दिया था जिसमें यह बताया था कि 6,45,472 स्टूडेन्ट्स, विद्यार्थी पूरे देश के अन्दर इन विद्यालयों में पढ़ रहे हैं और आज के जवाब से पता चलता है कि कुल 794 केन्द्रीय विद्यालय चल रहे हैं । इससे अंदाजा लगता है कि बहुत संख्या बढ़ गई है । इस बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए क्या कुछ प्रदेशों में जहां स्टूडेन्ट्स की तादाद बहुत ज्यादा है कुछ नये विद्यालय खोलने पर सरकार विचार कर रही है जैसे कि मध्य प्रदेश है जहां पर 52 हजार स्टूडेन्ट्स पढ़ रहे हैं, महाराष्ट्र है, उत्तर प्रदेश है और इसी तरह से दूसरे प्रदेश हैं जहां पर स्टूडेन्ट्स की संख्या बहुत ज्यादा है ? दूसरे जो अखबारों से पता चलता है, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि यह जो दूसरी शिफ्ट का सिलसिला केन्द्रीय विद्यालयों में शुरू किया गया है बढ़ती हुई संख्या का सामना करने के लिए, क्या यह उपयोगी तजर्बा रहा है या इससे नुक्सान हो रहा है और यदि नुक्सान हो रहा है तो क्या सरकार यह जो दूसरी शिफ्ट का चलाने का तरीका शुरू किया गया है उसको बंद करने पर विचार कर रही है ? साल, दो साल के अन्दर ही विद्यार्थियों की इतनी संख्या बढ़ गई तो इस प्रपोरशन में क्या टीचरों इत्यादि की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है या उसी पुराने स्टाफ से काम चलाया जा रहा है ? तीसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या क्लासेज के अन्दर जो निर्धारित संख्या होती है 30-35 की, उसी हिसाब से क्लासेज चल रही है या क्लासेज में स्टूडेन्ट्स की संख्या बहुत ज्यादा है और वह 45-46 से भी ज्यादा 60-70 तक पहुंच गई है और कहीं कहीं जिसकी वजह से पढ़ाई पर कुप्रभाव पड़ रहा है ? इसलिए क्या मंत्री जी इस पर विचार करेंगे कि इसको कंट्रोल किया जाय ?

†[ ] श्री सैयद सिब्ते रज़ी : मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि दिन प्रति दिन केन्द्रीय विद्यालयों के ऊपर दबाव बढ़ता चला जा रहा है और माननीय मंत्री जी ने इसी सदन में अनस्टार्ड क्वेश्चन संख्या ۷۳۶ के संबंध में 30 जुलाई, 1993 को जवाब दिया था जिसमें यह बताया था कि ۶,۴۵,۴۷۲ स्टूडेन्ट्स, विद्यार्थी पूरे देश के अन्दर इन विद्यालयों में पढ़ रहे हैं और आज के जवाब से पता चलता है कि कुल ۷۹۴ केन्द्रीय विद्यालय चल रहे हैं । इससे अंदाजा लगता है कि बहुत संख्या बढ़ गई है । इस बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए क्या कुछ प्रदेशों में जहां स्टूडेन्ट्स की तादाद बहुत ज्यादा है कुछ नये विद्यालय खोलने पर सरकार विचार कर रही है जैसे कि मध्य प्रदेश है जहां पर ۵۲ हजार स्टूडेन्ट्स पढ़ रहे हैं, महाराष्ट्र है, उत्तर प्रदेश है और इसी तरह से दूसरे प्रदेश हैं जहां पर स्टूडेन्ट्स की संख्या बहुत ज्यादा है ? दूसरे जो अखबारों से पता चलता है, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि यह जो दूसरी शिफ्ट का सिलसिला केन्द्रीय विद्यालयों में शुरू किया गया है बढ़ती हुई संख्या का सामना करने के लिए, क्या यह उपयोगी तजर्बा रहा है या इससे नुक्सान हो रहा है और यदि नुक्सान हो रहा है तो क्या सरकार यह जो दूसरी शिफ्ट का चलाने का तरीका शुरू किया गया है उसको बंद करने पर विचार कर रही है ? साल, दो साल के अन्दर ही विद्यार्थियों की इतनी संख्या बढ़ गई तो इस प्रपोरशन में क्या टीचरों इत्यादि की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है या उसी पुराने स्टाफ से काम चलाया जा रहा है ? तीसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या क्लासेज के अन्दर जो निर्धारित संख्या होती है 30-35 की, उसी हिसाब से क्लासेज चल रही है या क्लासेज में स्टूडेन्ट्स की संख्या बहुत ज्यादा है और वह 45-46 से भी ज्यादा 60-70 तक पहुंच गई है और कहीं कहीं जिसकी वजह से पढ़ाई पर कुप्रभाव पड़ रहा है ? इसलिए क्या मंत्री जी इस पर विचार करेंगे कि इसको कंट्रोल किया जाय ?

†[ ] श्री سید سبط رضی : میں مانئیے منتری جی سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ دن پرتی دن کیندریہ ودیالیوں کے اوپر دباؤ بڑھتا چلا جا رہا ہے اور مانئیے منتری جی نے اسی سدن میں ان اسٹارڈ کریشچن سنکھیا ۷۳۶ کے سمبندھ میں ۳۰ جولائی ۱۹۹۳ کو جواب دیا تھا جس میں یہ بتایا تھا کہ ۶،۴۵،۴۷۲ اسٹوڈنٹس ۔ ودیارتھی پورے دیش کے اندر ان ودیالیوں میں پڑھ رہے ہیں ۔ اور آج کے جواب سے پتہ چلتا ہے کہ کل ۷۹۴ کیندریہ ودیالیہ چل رہے ہیں ۔ اس سے اندازہ لگتا ہے کہ بہت سنکھیا بڑھ گئی ہے اس بڑھتی ہوئی سنکھیا کو دیکھتے ہوئے کیا کچھ پردیشوں میں جہاں اسٹوڈنٹس کی تعداد بہت زیادہ ہے کچھ نئے ودیالیہ کھولنے پر سرکار وچار کر رہی ہے ۔ جیسے کہ مدھیہ پردیش ہے جہاں ۵۲ ہزار اسٹوڈنٹس پڑھ رہے ہیں مہاراشٹر ہے ۔ اتر پردیش ہے اور اسی طرح سے دوسرے پردیش ہیں جہاں پر اسٹوڈنٹس کی سنکھیا بہت زیادہ ہے ۔ دوسرے جو اخباروں سے پتہ چلتا ہے ۔ میں مانئیے منتری جی سے جاننا چاہوں گا کہ یہ جو دوسری شفٹ کا سلسلہ کیندریہ ودیالیوں میں شروع کیا گیا ہے بڑھتی ہوئی سنکھیا کا سامنا کرنے کیلئے ۔ کیا یہ اپیوگی تجربہ رہا ہے یا اس سے نقصان ہو رہا ہے اور یدی نقصان ہو رہا ہے تو کیا سرکار یہ جو دوسری شفٹ کو چلانے کا طریقہ شروع کیا گیا ہے اس کو بند کرنے پر وچار کر رہی ہے ۔ سال دو سال کے اندر

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

ہی ودیارتھیوں کی اتنی سنکھیا بڑھ گئی ہے تو اس پریپوزیشن میں کیا ٹیچروں اتیادی کی سنکھیا میں بھی بڑھوتری ہوئی ہے یا اسی پرانے اسٹاف سے کام چلایا جا رہا ہے میری بات میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کیا کلاسیز کے اندر جو نرد ھارت سنکھیا ہوتی ہے ۳۵۔ ۳۵ کی۔ اسی حساب سے کلاسیز چل رہی ہیں۔ یا کلاسیز میں اسٹوڈنٹس کی سنکھیا بہت زیادہ ہے اور ۴۶۔۴۵ سے بھی زیادہ ۷۰۔۶۰ تک پہنچ گئی ہے اور کہیں کہیں جس کی وجہ سے پڑھائی پر پریشاؤ پڑ رہا ہے۔ اس لئے کیا منتری جی اس پر وچار کریں گے کہ اس کو کنٹرول کیا جائے۔

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, इसमें दो मत नहीं है कि सेन्ट्रल स्कूलों की संख्या बढ़ी है और यह संख्या बढ़ने की वजह भी माननीय सदस्यों को मालूम है । जहां इस तरह के स्कूल खोले जाते हैं उनका माप दण्ड क्या है वह भी स्पष्ट है । लेकिन संख्या बढ़ने की वजह से जो समस्याएं उत्पन्न हुई हैं उनमें वे समस्याएं हैं जिनका उल्लेख माननीय सदस्य ने यहां पर किया है । जहां तक शिफ्ट का सवाल है, जहां संख्या ज्यादा हो जाती है वहां पर शिफ्ट एक से दो की गई है और मैं समझता हूं कि उनका इतना बड़ा कुप्रभाव नहीं पड़ा है कि शिफ्ट को बंद किया जाय । जहां तक अध्यापकों का सवाल है, जो रेक्रूटमेंट है वह पूरी तरह से उस बिन्दु तक नहीं पहुंचा है कि जितनी कुल आवश्यकता है वह सबके सब विद्यमान हों, लेकिन गेप धीरे-धीरे कम हो रहा है और रेक्रूटमेंट और जल्दी करने की कोशिश की जा रही है । जहां तक और नये स्कूल उन जगहों पर खोलने का सवाल है जहां छात्रों की संख्या ज्यादा है । मैं समझता हूं इस आधार पर स्कूल तो नहीं खोले जा सकते हैं । स्कूल खोलने का जो मापदंड इसमें दिया हुआ है, उन्हीं मापदंडों के आधार पर और फिर सम्माननीय सदस्यों की ओर से भी जो जनहित में आवश्यकताएं निर्धारित बताई जाती हैं, उनको ध्यान में रख कर ही हम स्कूल खोल सकते हैं । आज की वित्तीय परिस्थिति में प्रतिवर्ष लगभग 20 स्कूल खोले जा रहे हैं । निकट भविष्य में उनकी संख्या प्रति वर्ष इससे बढ़ेगी, मुझे इसकी संभावना कम दिखाई देती है ।

सैयद सिब्ते रज़ी : सभापति महोदय, जैसे कि माननीय मंत्री जी ने अभी बताया, मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि दूसरा वित्तीय आयोग जब बना था तो उसने यह सिफारिश की थी कि केन्द्रीय विद्यालय केन्द्रीय सरकार में काम करने वाले कर्मचारियों, फौज में काम करने वाले अधिकारियों और सिपाहियों या हमारी पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग्ज़ में जो लोग काम करते हैं, विशेष तौर पर उनके यहां यह सुविधा दी जाएगी । लेकिन धीरे-धीरे जैसे कि अभी माननीय मंत्री जी ने कहा कि सामाजिक आवश्यकताएं बढ़ती गई और इन विद्यालयों में इन केटेगरीज़ के इलावा भी हमारे स्टूडेंट्स को भर्ती किया जाने लगा । मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा जिस तरह से उन्होंने विवरण दिया है, यह तादाद स्टूडेंट्स की इन केन्द्रीय विद्यालयों में कुछ प्रदेशों में बहुत ज्यादा बढ़ गई है ।

सभापति महोदय, बुनियादी तौर पर शिक्षा जो है यह राज्य का विषय है लेकिन केन्द्रीय विद्यालयों को हमने अपने कर्मचारियों के लिए खोला था । क्या माननीय मंत्री जी प्रदेशों की सरकारों से इस सिलसिले में बातचीत करेंगे क्योंकि उनके प्रदेशों के बच्चे जो इस केटेगरी में नहीं आते, हमारे स्कूलों में पढ़ रहे हैं, क्या वह भी उसका भार वहन करेंगे, कुछ ज़मीन आदि देंगे जिससे इस तरह के विद्यालय और बनाये जा सकें या हमारे एग्ज़िस्टिंग विद्यालयों पर जो भार पड़ा रहा है, इसको बांटा जा सके ?

सभापति महोदय, हमारे शिक्षाविदों का इनवाल्वमेंट हमारे केन्द्रीय विद्यालयों में थोड़ा कम होता जा रहा है । क्या माननीय मंत्री जी इस बात पर विचार करेंगे कि इसके संगठनात्मक ढांचे में, इनके प्रशासन में और शिक्षा के उन्नयन और स्तर को बनाए रखने के लिए किसी स्तर पर आगे जा कर के क्या शिक्षाविदों का इनवाल्वमेंट किया जाएगा ? यदि किया जाएगा तो उसकी परिस्थिति क्या है ? तीसरा भाग मेरे प्रश्न का यह है कि विदेशों के संबंध में अभी दो तीन ही विदेशों में आपने स्कूल खोले हुए हैं, यह माननीय मंत्री जी ने कहा है ? लेकिन हमारे जो बाहर दूतावासों में बहुत सारे देशों के अन्दर भारतीय रहते हैं, उनको अपने बच्चों की शिक्षा के बारे में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।

MR. CHAIRMAN : Please conclude.

SYED SIBTEY RAZI : I am concluding.

उनको शिक्षा देने के सिलसिले में इस उद्देश्य को सामने रखते हुए क्या माननीय मंत्री जी ऐसा सर्वे करायेंगे अन्य देशों में जहां हमारे दूतावास काम कर रहे हैं या बहुत सारे भारतीय रहते हैं, उनके बारे में ऐसा सर्वे करायेंगे कि वहां ऐसे स्कूल खोले जाने चाहियें ? यदि इसका पोज़ीटिव सर्वे मिलता है तो क्या ऐसे स्कूल दूसरे देशों में खोले जाएंगे ?

جو اس کیٹیگری میں نہیں آتے۔ ہمارے اسکولوں میں پڑھ رہے ہیں کیا وہ بھی اس کا بھار وہن کریں گے۔ کچھ زمین آدمی دیں گے جس سے اس طرح کے ودیالیہ اور بنائے جا سکیں یا ہمارے ایگزسٹنگ ودیالیوں پر جو بھار پڑ رہا ہے۔ اس کو بانٹا جا سکے۔ سبھاپتی مہودے۔ ہمارے شکشا ودوں کا انوالومنٹ ہمارے کیندریہ ودیالیوں میں تھوڑا کم ہوتا جا رہا ہے۔ کیا مانیئے منتری جی اس بات پر وچار کریں گے کہ اس کے سنگھٹنا تمک ڈھانچے میں۔ ان کے پرشاسن میں اور شکشا کے انیّن ستر کو بنائے رکھنے کے لئے کسی ستر پر آگے جا کر کے کیا شکشا ودوں کا انوالومنٹ کیا جائے گا۔ یدی کیا جائے گا تو اس کی پرستھتی کیا ہے۔ تیسرا بھاگ میرے پرشن کا یہ ہے کہ ودیشوں کے سمبندھ میں ابھی دو تین ہی ودیشوں میں آپ نے اسکول کھولے ہوئے ہیں۔ یہ مانیئے منتری جی نے کہا ہے۔ لیکن ہمارے جو باہر دوتاوا سوں میں بہت سارے دیشوں کے اندر بھارتیہ رہتے ہیں ان کو اپنے بچّوں کی شکشا کے بارے میں بہت سی سمسیاؤں کا سامنا کرنا پڑتا ہے پڑ رہا ہے۔

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SYED SIBTEY RAZI: I am concluding.

شری سیّد سبط رضی: سبھاپتی مہودے۔ جیسے کہ مانیئے منتری جی نے ابھی بتایا۔ میں انکو یاد دلانا چاہتا ہوں، کہ دوسرا ویتیے آیوگ جب بنا تھا تو اس نے یہ سفارش کی تھی کہ کیندریہ ودیالیہ کمیشن میں کام کرنے والے کرمچاریوں۔ فوج میں کام کرنے والے ادھیکاریوں اور سپاہیوں یا ہماری پبلک سیکٹر انڈر ٹیکنگز میں جو لوگ کام کرتے ہیں۔ وشیش طور پر ان کے یہاں یہ سویدھا دی جائے گی۔ لیکن دھیرے دھیرے جیسے کہ ابھی مانیئے منتری جی نے کہا کہ سامانجک آوشکتائیں بڑھتی گئی اور ان ودیالیوں میں ان کیٹیگریز کے علاوہ بھی ہمارے اسٹوڈنٹس کو بھرتی کیا جانے لگا۔ میں مانیئے منتری جی سے کہنا چاہوں گا کہ جس طرح سے انہوں نے وورن دیا ہے۔ یہ تعداد اسٹوڈنٹس کی ان کیندریہ ودیالیوں میں کچھ پردیشوں میں بہت زیادہ بڑھ گئی ہے۔

سبھاپتی مہودے۔ بنیادی طور پر شکشا جو ہے یہ راجیہ کا وشے ہے۔ لیکن کیندریہ ودیالیوں کو ہم نے اپنے کرمچاریوں کے لئے کھولا تھا۔ کیا مانیئے منتری جی پردیشوں کی سرکاروں سے اس سلسلہ میں بات چیت کریں گے۔ کیوں کہ ان کے پردیشوں کے بچے

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

†[ان کو شکشا دینے کے سلسلہ میں اس اُدیشیئے کو سامنے رکھتے ہوئے کیا مانیئے منتری جی ایسا سروے کرائیں گے۔ انیئے دیشوں میں جہاں ہمارے دوتاواس کام کر رہے ہیں۔ یا بہت سارے بھارتیہ رہتے ہیں۔ ان کے بارے میں ایسا سروے کرائیں گے کہ وہاں ایسے اسکول کھولے جانے چاہئیں یدی اس کا پوزیٹو سروے ملتا ہے تو کیا ایسے اسکول دُوسرے دیشوں میں کھولے جائیں گے۔]

श्री अर्जुन सिंह : आदरणीय सभापति महोदय, इसमें दो मत नहीं हैं कि स्कूलों की संख्या बढ़ने की वजह से कुछ परिस्थितियां सामने आती हैं, जिन पर हमें विचार करना पड़ता है । यह स्कूल प्राथमिक रूप से केवल शासकीय कर्मचारियों के बच्चों के लिए थे लेकिन अब चूंकि यहां की शिक्षा का स्तर काफी अच्छा है और सामान्यजनों को इनसे वंचित करना उपयुक्त नहीं समझा गया, इसलिए इनमें भर्ती की अनुमति दी गई है । जहां तक प्रदेशों के शासन का सवाल है, उनके द्वारा वित्तीय भार वहन करने की बात अभी नहीं आई है लेकिन जहां तक भूमि का सवाल है, भूमि प्रदेश शासन निशुल्क उपलब्ध कराता है । इस तरह से एक प्रकार से एक योगदान प्रान्तीय शासन का इन स्कूलों के संचालन में होता है । जहां तक विदेशों में और स्कूल खोलने का प्रश्न है, इस विषय पर एक व्यापक रूप से कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता । जब जहां परिस्थिति निर्मित होगी और आवश्यकता महसूस की जाएगी तो अवश्य विचार किया जाएगा ।

SHRI RAMACHANDRAN PILLAI : Sir, the Kendriya Vidyalaya Sangathan is a registered autonomous body financed by the Government. I would like to know from the hon. Minister what is the nature of control of the Government over this body. Which is the supervisory body looking after the affairs of the Sangathan, particularly, with regard to appointment of teachers and also selection of students ?

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

SHRI ARJUN SINGH : Sir, as the hon. Member has said, this is a registered body. There is a Governing Board and the Board takes all the decisions with regard to the schools. The Government is financing it and the Government has its representatives on the Board. The Minister is the Chairman, and we try to take decisions on the advice and help of the members of the Board on which educationalists are reperesented, the Sangathan teachers are also represented. I think, till now there has been no great problem on any aspect of the running of the Kendriya Vidyalayas.

So far as the decision to admit children is concerned, I have alredy said that we do it on the availability of seats. There are certain dispensation admissions about which the House is aware. For this we have a small Committee under the chairmanship of a Member of the Consultative Committee, Shrimati Malni Bhattacharya, Member of Praliament; and some other Members of Parliament are also there. They decide on the dispensation admissions.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मूलत: क्या है, मुख्यत: क्या है ? ये मूलत: अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा देते हैं कि हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देते हैं ? मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मातृभाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने की सार्वजनीन व्यवस्था है । दुनिया के सभी देशों में मातृभाषा के माध्यम से बच्चों को शिक्षा दी जाती है । इसका पालन कहां तक केन्द्रीय विद्यालयों में होता है ?

श्री अर्जुन सिंह : सभापति महोदय, यह तो सामान्य जानकारी है कि इनमें शिक्षा हिंदी में होती है । अंग्रेजी की भी शिक्षा है । लेकिन यह कि एक ही भाषा में पूरी शिक्षा होती हो ऐसा नहीं है और इन स्कूल्स में अभी तक का जो अनुभव है, ऐसी कोई कठिनाई सामने नहीं आई है कि माध्यम के बारे में छात्रों को किसी प्रकार की कठिनाई आई हो ।

श्री गुंडप्पा कोरवार : सभापति महोदय, आपके जरिये से मैं सरकार से जानना चाह रहा हूं कि इन केन्द्रीय विद्यालयों में शेड्यूल्ड कास्ट्स और शिड्यूल्ड ट्राइब्स के बच्चों के लिए क्या प्रावधान है ? अगर है तो इन स्कूलों में ऐसे पढ़ने वालों की संख्या कितनी है, यह मैं जानना चाहता हूं ।

SHRI ARJUN SINGH : Sir, I would like to have a notice for this question so that I can give a comprehensive answer.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO : Mr. Chairman, Sir, now the recommendations

by MPs are limited to two seats which apply to Delhi schools only. Now that there are so many Kendriya Vidyalayas in other States, I would request the hon. Minister to consider the possibility of recommending more seats in the States also—more quota for the States.

AN HON. MEMBER : Unanimous.

SHRI ARJUN SINGH : The hon. House is aware that there was some criticism about admissions under the dispensation scheme. We have to take a mean on these matters. We cannot go either to the one extreme or to the other extreme. *(Interruptions)*. So, on the basis of what the hon. Member says, we will consider the whole thing afresh and perhaps for next year we can see what can be done.

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : Sir, of course, these are model schools. Now the question is that these schools were meant for transferable Government servants. This was the basic idea. Public undertaking employees were also covered. Now when the pressure is going up due to various factors, I would like it to be limited to the Government servants and public sector undertaking employees only. The second shift that was started, I think, should be expanded. I think it should be expanded because the teachers are not in favour of second shifts. Sometimes their representations do come to us, saying that this creates a problem. For the second shift, the financial layout is the same.

MR. CHAIRMAN : Please frame your question.

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : One personal question. I have never recommended any student for a Kendriya Vidyalaya.

DR. YELEMANCHILI SIVAJI : Why didn't you recommend ?

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : Because I understand the character of the institution. But two students were admitted in my name because somebody might have written a letter in my name. I don't request the Ministers. Would you get a confirmation of the recommendation from us by sending a letter that so-and-so names are there and we should confirm them ? Otherwise there is a possibility of fraud. ..*(Interruptions)*..

MR. CHAIRMAN : Let the Minister answer this, not the personal part but the other part of the question.

SHRI CHIMANBHAI MEHTA : I wrote to the Commissioner of the Central Schools Organization.

SHRI ARJUN SINGH : I can understand the indignation of the hon. Member. It is fully justified that if you have not recommended anyone and someone has been admitted in your name, it deserves very close inquiry. And we will make that inquiry. We are trying to confirm whether the recommendations are there or not, because in the previous years there were some instances like this. Therefore, we want to make very sure that the hon. Members are not in any way embarrassed in this matter. If there has been a lapse on our part, in your case, I would apologize for it. We will find it out and inform you.

श्री रफीक आलम : सभापतिजी, सवेरे-सवेरे अगर आप स्कूल के बच्चों को देखें, तो छोटे-छोटे बच्चे और बोझ इतना कि गधा भी नहीं उठा सकता । हमारे यहां प्रिवेन्शन आफ क्रूयल्टी टु एनिमल्ज तो कानून है, लेकिन मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि प्रिवेन्शन आफ क्रूयल्टी टु चिल्ड्रन कानून कब बनेगा ? हम लोग भी पढ़े हैं, लेकिन टाईम-टेबल के मुताबिक किताबें ले जाते थे, पर अब पूरी किताबें बच्चे ले जाते हैं ।

†شری رفیق عالم: سبھاپتی جی، سویرے سویرے اگر آپ اسکول کے بچّوں کو دیکھیں تو چھوٹے چھوٹے بچے اور بوجھ اتنا کہ گدھا بھی نہیں اٹھا سکتا۔ ہمارے یہاں پوزیشن آف کروئلٹی ٹو چلڈرن قانون کب بنے گا۔ ہم لوگ بھی پڑھے ہیں لیکن ٹائم ٹیبل کے مطابق کتابیں لے جاتے تھے پر اب پوری کتابیں بچّے لے جاتے ہیں۔

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे : पढ़े हैं लेकिन इतना बोझ सहा नहीं ।

MR. CHAIRMAN : I think this has been raised in the House earlier also.

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

SHRI ARJUN SINGH : Sir, I would like to inform hon. Members, with your kind permission, that this is an issue which was raised in this House and the other House. We had appointed a committee under the chairmanship of Prof. Yashpal to go into it. He has submitted his report and it is being examined. I am sure that the recommendations which that Committee has made are very relevant recommendations, and I am even considering whether this House could also, on some occasion, debate that report, because it is a matter which has wide ramifications on our educational system and also so that from the next academic year we could take some concrete steps in that regard. It is a matter which we consider very, very important and crucial for the children.

MR. CHAIRMAN : Question No. 242.

...(Interruptions)...

Renovation of Kolar Gold Field' Karnataka

*242. SHRI G. Y. KRISHNAN : Will the Minister of MINES be pleased to state :

(a) what is the accumulated loss sustained by the century-old Kolar Gold Fields, (Bharat Gold Mines), Karnataka as on date;

(b) what are the reasons for such losses.

(c) whether any scheme has been or is being formulated to renovate these Mines with the help of latest machinery;

(d) if so, what are the details thereof; and

(e) if not, what are the reasons for not rejuvenating these gold mines ?

खान मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अतराम सिंह यादव) : (क) 31-3-1993 को भारत गोल्ड माईंस लि० का संचयी घाटा 128.98 करोड़ रु० था ।

(ख) आर्थिक रूप से लाभप्रद भण्डारों के समाप्त होने, ग्रेड में गिरावट आने, खान की अत्यधिक गहराई और अन्य समस्याओं के कारण भारत गोल्ड माईंस लि० को अपने कार्यचालन में घाटा हो रहा है, जिसके फलस्वरूप संचित घाटा हुआ है ।

(ग) से (ङ) कोलार गोल्ड फिल्ड की खानें, जिनके भंडार समाप्त हो गये हैं, के पुनरुद्धार की कोई योजना नहीं है, इसलिए इन्हें क्रमशः बंद किया जा रहा है । तथापि, कानूनी आवश्यकताओं के अनुसार, भारत गोल्ड माईंस लि० का मामला बी० आई० एफ० आर० को भेज दिया गया है और उन्होंने अपनी कार्यवाही शुरू कर दी है तथा इस कंपनी के लिए आई० सी० आई० सी० आई० को संचालन एजेंसी के रूप में नियुक्त कर दिया है ।

SHRI G. Y. KRISHNAN : Sir, it is unfortunate to know from the statement of the Minister that the Bharat Gold Mines are being closed. It is very unfortunate that several lakhs of people are being thrown into the streets.

Sir, the KGF is considered to be a British island, and John Tailor started the Bharat Gold Mines. After that, the same old machinery has been used and the same old type of mining has been done. The Minister conveniently avoided that aspect in the reply. He mentioned about exhaustion of the economic reserves, fall in the grade, ultradepth of the mines and other problems.

MR. CHAIRMAN : Please ask your supplementary now.

SHRI G. Y. KRISHNAN : Management is the problem. The management was not proper.

In addition, modern equipment were not introduced. Had modern equipment been used, the ore output would have definitely increased.

I would like to ask of the Minister why latest machinery has not been introduced. The management has not been rejuvenated. What is the ore output in the past five years compared to the previous years ?

श्री अतराम सिंह यादव : मान्यवर, यह भारत गोल्ड माईंस लगभग 110 वर्ष पुरानी खान है, जो ब्रिटिश शासनकाल में स्थापित हुई थी और धीरे-धीरे जैसे इसकी खुदाई होती गई तो आज लगभग 3 किलोमीटर नीचे इसमें खनन का कार्य चल रहा है । मान्यवर, आज जो गोल्ड-ओर है उसमें जो सोने के कंटेंट हैं, वे बहुत कम पाए जाते हैं । इसलिए लगातार इस खान में घाटा हो रहा है । आज से लगभग 7 वर्ष पहले केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने यह फैसला लिया था कि हम धीरे-धीरे करके इस खान को 7 वर्ष के अन्दर बंद करेंगे । मान्यवर, जब उसमें गोल्ड कंटेंट नहीं है तो इस खान को वाएबल करना बहुत मुश्किल है और इसलिए यह फैसला लिया गया है । जहां तक माननीय सदस्य ने यह कहा कि लेटेस्ट इसमें जो टैक्नोलोजी है यह है, वह है तो वह एक अलग प्रश्न है उस संबंध में क्योंकि एक नई आर्थिक नीति हमारे सामने आई है, भारत सरकार के सामने आई है, उस दशा में आगे देखेंगे कि क्या हो सकता है । अगर ज्यादा कुछ हो सकता है तो निश्चित रूप से हम उस पर नई टैक्नोलोजी लाने के लिए अगर कोई देश उसमें इन्टरेस्टेड होगा, उसकी रूचि होगी तो हम निश्चित रूप से विचार करेंगे ।

SHRI G. Y. KRISHNAN : Sir, it is learnt that of late the gold obtained in the past few months